

मास्टर को दिव्य दर्शन

एक दिन श्रीभक्तकोकिलजी अपनी एकान्त कुटिया में किवाड़ बन्दकर भजन कर रहे थे । वह मास्टर भक्त अचानक ऊपर चढ़ आया और किवाड़ की सन्धि से देखा तो मालूम हुआ कि भीतर तो प्रकाश-ही-प्रकाश है । एक चमचम चमकते हुए दिव्य हिंडोले पर परम आल्हादमयी शिशुमूर्ति श्रीजनकनन्दिनी विराजमान हैं और श्रीस्वामीजू सहचरी रूप में दिव्य वस्त्राभूषणों से सजधजकर झोटे दे रहे हैं । कभी-कभी दूध की कटोरी मुख से लगाते और चिबुक पर हाथ रखकर कहते हैं-

दूध पियो मेरी लाली ललाम ।

बेटी वैदेही बोलो श्रीराम ॥

जुग जुग जियो श्रीपार्थिवी पुत्री सफल होवहिं मन वांछित काम ॥
कुशल रहें दृगचन्द्र चरण जुग शुभ सगुन सदा बेटी सुखधाम ॥
गरीबि श्रीखण्डि कोकिलतन है युगल पदों में पाँऊँ विश्राम ॥

यह दिव्य आनन्द देखकर मास्टर साहब का रोम-रोम पुलकित हो गया ।